International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-06-2024, Accepted: 10-07-2024, Published: 02-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 27-28

हिन्दी भाषा उत्पत्ति में ई–पत्रिकाओं की भूमिका

सृष्टि कुशवाहा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मदनमोहन मालवीय पी०जी० कॉलेज, कालाकांकर, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी जिस प्रकार से एक वैश्विक भाषा बनती जा रही है उस प्रकार का आर्थिक सहयोग उसे न मिल पाने के कारण वह अपना समुचित विकास नहीं कर पा रही थी परन्तु लघु पत्रिकाओं के समानांतर उभरती ई–पत्रिकाओं में एक बेहतर विकल्प तलाशने में बहुत मदद की है। इन पत्रिकाओं में अभिव्यक्ति को किसी शब्द सीमा में नहीं बांधा जाता यही कारण है कि लेखक अपनी बातें इस मंच पर खुले तौर पर करने में नहीं हिचकते। इन पत्रिकाओं की पहुँच का विस्तार भी पाठकों तक ज्यादा है। दस्तावेजों की सुरक्षा के मामले में भी ई–पत्रिकाएं ज्यादा सुरक्षित हैं। निस्संदेह ई–पत्रिकाओं ने हिन्दी की दुनिया में एक एक क्रांति ला दी है। आज जिस तरह से तकनीकी अपने वर्चस्व को स्थापित करती जा रही है ऐसे में इन पत्रिकाओं का स्थायी महत्व बढ़ता जा रहा है जो कि हिन्दी के भविष्य के लिए एक सुखद संदेश है।

मूल शब्दः वैश्विक भाषा, ई–पत्रिकाएं, दस्तावेजों की सुरक्षा, क्रान्ति

बीते कुछ वर्षों पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो भारत में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आमूल चूल परिवर्तन देखने को मिला है। नए–नए सॉफ्टवेयर एवं तकनीकी के नवीन उपकरणों के प्रयोग से हिन्दी के स्वरूप में पर्याप्त विस्तार हुआ है, इसके साथ ही हिन्दी भाषा अपनी वैज्ञानिक विशेषताओं एवं आधुनिक मानकों के अनुरूप खुद को ढालने और परिष्कृत करने में और अधिक सक्षम हुई है। निस्संदेह तकनीकी युग में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। आज के युग में हिन्दी केवल साहित्यिक भाषा ही नहीं रह गयी बल्कि रोजगार के क्षेत्र में भी व्यापक वितान खींचती नजर आ रही है। एक ओर जहाँ प्रिंट मीडिया अपने पैर पसार रही है वहीं संचार के डिजिटल उपकरणों का प्रयोग भी बढ़ा है। इसका सबसे बड़ा कारण है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर बदलते मानदण्ड तथा लोगों का और भी अधिक सजग होना। फिर बात चाहे ब्लॉग लेखन की हो, ट्विटर या फेसबुक की हो, या किसी निजी पोर्टल की, हर जगह अभिव्यक्ति का खुलापन दिखाई देता है।

वैश्विक पटल पर प्रौद्योगिकी सम्बन्धी विकसित होने वाली अवधारणा ने ये विचार बना रखा था कि वैज्ञानिक विकास की परिणति केवल अंग्रेजी भाषा में ही सम्भव है। परन्तु समय के विकास ने इस मिथक को तोड़ते हुए वैचारिक क्रान्ति की नई अवधारणा विकसित की है। आज ये पूर्ण रूपेण स्वीकार्य हो चुका है कि विकास की इबारत केवल अंग्रेजी भाषा से ही नहीं हिन्दी भाषा से भी लिखी जा सकती है। वर्तमान में पाठकों का रुझान ई–लर्निंग की तरफ काफी दिखाई दे रहा है। कृष्ण कुमार मिश्र के द्वारा इस सन्दर्भ में की गयी टिप्पणी प्रासंगिक प्रतीत होती है कि– ''पिछले तीन दशकों के दौरान देश में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आयी क्रांति ने समूचे परिदृश्य को बदल दिया है। पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल माध्यम से विज्ञान के पठन–पाठन के क्षेत्र में एक सशक्त एवं प्रभावी विधा के रूप में उभरा है। इसमें दृश्य–श्रव्य, वीडियो, एनिमेशन तथा अनुरूपण द्वारा सूचना को प्रभावी तरीके से छात्रों तक पहुँचाया जा सकता है। शिक्षा में पाठ्यसामग्री की बेहतर समझ तथा विज्ञान की संकल्पनाओं की साझा समझ विकसित करने में ई–सामग्री मददगार सावित हो रही है। प्रतिभा संवर्धन हेतु वेब–आधारित सामग्रियों की उपयोगिता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही ही। इस दृष्टि से हिन्दी ई–जगत विस्तृत और समृद्ध हो रहा है।''[1]

''इस प्रकार कम्प्यूटर, मोबाइल उपकरणों तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विभिन्न भाषाओं में काम करने की सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है। भारत की विभिन्न जनपदीय भाषाओं और मातृभाषाओं के सन्दर्भ में स्वाधीन भारत में भाषा प्रौद्योगिकी के विकास को स्वभाषा के उत्थान के लिए समर्पित तकनीकीविदों के प्रयासों का परिणाम माना जा सकता है।''[2]

इस बात में कोई संदेह नहीं कि तकनीकी के प्रयोग से ई–सामग्री के प्रयोग को विस्तार मिला है तथा इसकी उपलब्धता भी सर्वजन तक हुई है। जहाँ तक साहित्य की बात की जाए तो इस क्षेत्र में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने विशेष भूमिका निभाई है, एक सर्वे के अनुसार बीते कुछ वर्षों में आर्थिक अभाव के कारण हिन्दी की कई पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया। अब वो प्रिंट माध्यम से छपने की बजाय इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रकाशित होने लगी हैं। इस क्रम में 'लमही', और 'अलाव' जैसी पत्रिकाओं को देखा जा सकता है। हिन्दी की लघु पत्रिकाओं के समक्ष सदैव एक बड़ी चुनौती रहती है कि उनके प्रकाशन हेतु उचित अनुदान नहीं मिल पाता है। और विज्ञापनों की भी कमी रहती है जिसके कारण पत्रिकाओं के नियमित प्रकाशन में दिक्कतें बनी रहती हैं। ऐसी परिस्थितियों के कारण ही ई–पत्रिकाओं का उदय हुआ।

प्रकाशन के अभाव में सुधी पाठक पत्रिकाओं में छपने वाली सामग्री से लाभान्वित नहीं हो पाते थे। प्रिंट पत्रिकाओं के बरक्स यदि देखें तो ई–पत्रिकाओं की सुलभता और लोक प्रियता भी कहीं अधिक हैं। इन पत्रिकाओं में पृष्ठांकन की कोई तय सीमा नहीं होती साथ ही धन का व्यय भी प्रिंट पत्रिकाओं के प्रकाशन की तुलना में कम होता है तथा वितरण में जहाँ प्रिंट पत्रिका की पहुंच एक सीमित वर्ग तक ही पाती थी वहीं ई–पत्रिका उँगली के एक क्लिक पर हजारों लोगों को उपलब्ध हो जाती है।

सूचना क्रांति के दौर में सरकारी स्तर पर भी हिन्दी के विकास को लेकर कई प्रयास किए जा रहे हैं हरीश कुमार सेठी के द्वारा उनके एक लेख में ये बात स्पष्ट कही गयी है कि ''आज विश्व सूचना प्रौद्योगिकी सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे अभूतपूर्व विकास वास्तव में किसी भी देश के विकास का मानक बन गए हैं इस विकास ने ये सिद्ध कर दिया है कि अगर किसी देश और समाज की प्रगति करनी है तो वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बिना सम्भव नहीं। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय समाज के जन मानस को ज्ञान विज्ञान से सम्बद्ध एवं सम्पन्न करने के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को अपनाना तथा

उसके कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए जीवन व्यवहार का अंग बनाना जरूरी है।''[3]

इस प्रकार उपर्युक्त संदर्भ ग्रहण किया जाए तो नई संभावनाओं और चुनौतियों से इनकार नहीं किया जा सकता। ये कहना भी यहाँ समीचीन होगा कि हिन्दी को तकनीकी माध्यम से जोड़ने में तथा साहित्य के विस्तार को गति प्रदान करने में ई–पत्रिकाएं अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वर्तमान में अनेक ऐसी ई–पत्रिकाएं है जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में कई सारे मानदण्डों की स्थापना की है। जैसे– समालोचन, सेतु, जनकृति, अपनी माटी, आजकल, परिवर्तन, शोध चिंतन पत्रिका, कंचनजंघा, पूर्वोत्तर, सृजन, पूर्वांगन, राजभाषा परिवार एवं अनुकर्ष जैसी पत्रिकाएं। हिन्दी के कुछ महत्त्वपूर्ण ब्लॉग एवं साहित्य कोश के ई–पोर्टल ने भी इसी क्रम में साहित्य की रचनाधर्मिता और क्रियाशीलता को विस्तृत रूप प्रदान करने और उसकी संरक्षा का कार्य किया है जिनमें– 'जानकीपुल, 'पहली बार' (ब्लॉग), 'कविता कोश' 'हिंदवी' एवं 'हिन्दी समय' इत्यादि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है।

'समालोचन' ई पत्रिका वर्ष 2010 से एक ब्लॉग और वेब पत्रिका के रूप से संचालित एवं समादृत है। मुख्य रूप से इस पोर्टल का उद्देश्य साहित्य, समाज और विचार की कलात्मक अभिव्यक्ति करना है। समालोचन के वेब पोर्टल पर पत्रिका के संदर्भ को दर्शाती निम्नलिखित पंक्तियां इसके महत्व को बताती हैं– ''समालोचन साहित्य, विचार और कलाओं की हिन्दी की प्रतिनिधि वेब पत्रिक है। डिजिटल माध्यम में स्तरीय विश्वसनीय, सुरुचिपूर्ण और नवोन्मेषी साहित्यिक पत्रिका की जरूरत को ध्यान में रखते हुए 'समालोचन' का प्रकाशन 2010 से प्रारम्भ हुआ, तब से यह नियमित और अनवरत है। विषयों की विविधता और दृष्टियों की बहुलता ने इसे हमारे समय की सांस्कृतिक परिघटना में बदल दिया है।''[4] वर्तमान साहित्य पर नजर डाली जााए तो लेखन कार्य तो बहुत हो रहे है परन्तु उसमें कलात्मकता और सृजनात्मकता का अभाव सा दिखाई देने लगा है। 'समालोचन' पत्रिका इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

'सेतु' नामक द्विभाषिक अन्तर्राष्ट्रीय ई–पत्रिका है जो कि सेंट पीट्सबर्ग, अमेरिका से वर्ष 2016 से मासिक रूप से नियमित प्रकाशित हो रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा को जोड़ने में वास्तव में इस पत्रिका ने एक सेतु का कार्य किया है। इस पत्रिका ने भारतीय प्रवासी एवं स्थानीय (अमेरिकी) रचनाकारों को एक साथ लाने और एक दूसरे के निकट लाने का कार्य किया है।

यदि हिन्दी की ई–पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डालें तो प्रिंट पत्रिकाओं के समानांतर ऐसी कई पत्रिकाएं रही है जो एक आंदोलन के रूप में सामने आयीं। 'जनकृति', 'परिवर्तन और 'अपनी माटी' पत्रिका, का नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। जनकृति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पत्रिका है। परन्तु इससे भी बड़ी बात है, की ये अपने आप में एक संस्था है। इस पत्रिका के संपादक के शब्दों में – ''जनकृति संस्था का गठन 10 अगस्त 2014 को वर्धा महाराष्ट्र में हुआ था। अपने इस सफर में संस्था द्वारा वर्ष 2015 से 'जनकृति' संस्था का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में कार्यरत विश्वहिंदीजन नाम से ई–संग्रहालय आरम्भ किया गया।''[5]

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ से नवंबर 2009 से प्रकाशित 'अपनी माटी' नामक साहित्यक ई–पत्रिका ने साहित्य जगत में विशेष योगदान दिया है। इस पत्रिका ने शोध के नए प्रतिमान गढ़े हैं और अपनी महत्वपूर्ण विशेताओं तथा उपस्थिति के कारण यह पत्रिका U.G.C. केयर लिस्ट में भी सम्मिलित है। ''यह कला, साहित्य, रंगकर्म सिनेमा, समाज, संगीत, पर्यावरण से जुड़े शोध, निबंध, साक्षात्कार आलेख सहित तमाम विधाओं में समाजविज्ञान और साहित्य से सम्बद्ध रचनाएं छपने और पढ़ने हेतु एक मंच है।''[6] त्रैमासिक पत्रिका के रूप में 'परिवर्तन' नामक ई–पत्रिका वर्ष 2016 से प्रकाशित हो रही है। बहुत ही कम समय में इस पत्रिका ने पर्याप्त ख्याति अर्जित कर ली। इस पत्रिका में युवा लेखकों को महत्त्व दिया गया है जो कि इस पत्रिका के युवा संपादक डॉ० महेश सिंह की देन है। पूर्वोत्तर भारत ने भी कुछ वर्षों में साहित्य जगत में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करायी है। 'कंचनजंघा' पूर्वोत्तर भारत की अत्यन्त प्रसिद्ध पत्रिका है। पूर्वोत्तर भारत से प्रकाशित होने वाली साहित्य पर आधारित पहली ई–पत्रिका होने का गौरव भी इसी पत्रिका को प्राप्त है। यह पत्रिका सिक्किम प्रान्त से प्रकाशित होने वाली पत्रिका है जिसे मुख्य रूप से उत्तरपूर्व के आठ राज्यों पर केन्द्रित किया गया है, और 2020 से यह अर्धवार्षिक पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है।

इसी क्रम में ''सिक्किम विवि० द्वारा वर्ष 2021 में अर्धवार्षिक पत्रिका के रूप में 'पूर्वोत्तर प्रभा' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। ई–पत्रिका के रूप में 'पूर्वोत्तर प्रभा' पूर्णतः रिसर्च जर्नल है। विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित शोध पत्रिका के रूप में इस पत्रिका की विशिष्ट पहचान है।''[7] ''अगस्त 2020 में राजभाषा कर्मचारियों के सहयोग से डॉ0 मुनीन्द्र मिश्र द्वारा त्रिपुरा प्रांत से 'राजभाषा परिवार' ई–पत्रिका की शुरुआत की गयी। इस पत्रिका का मूल ध्येय लोगों को राजभाषा के महत्व से परिचित कराना है।' राजभाषा परिवार पत्रिका' के अब तक कुल चार अंक प्रकाशित हुए, जिनमें प्रवेशांक को छोड़कर हिन्दी शोध, यात्रा वृत्तान्त एवं संस्मरण विशेषांक एवं लोक पर्व तथा लोक रीति विशेषांक उल्लेखनीय है।''[8]

इनके अतिरिक्त मणिपुर से 'कङला' नामक ई–पत्रिक की शुरूआत डॉ० विजयलक्ष्मी के संपादन में हुई। 'पूर्वांगन' ई–पत्रिका मेघालय से भारत प्रसाद एवं सुनील कुमार के नेतृत्व मे आरम्भ हुई जो कि एक अर्धवार्षिक पत्रिका है। ई–पत्रिकाओं की दृष्टि से असम राज्य भी काफी समृद्ध रहा है। डॉ० रीतामाणि वैश्य के सम्पादन में 'शोध चिंतन' नामक महत्त्वपूर्ण अर्धवार्षिक पत्रिका असम से प्रकाशित होने वाली उत्कृष्ट पत्रिका है। डॉ० रीतामणि वैश्य के शब्दों में ''शोध–चिंतन पत्रिका सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिन्दी शोध ई–पत्रिका है। यह पत्रिका कला एवं मानविकी पर हो रहे मानक शोधों को इलैक्ट्रॉनिक माध्यम के जरिए प्रकाशित तथा पाठक वर्ग तक सहजता से पहुंचाने का एक मंच है।''[9]

संदर्भ सूची

1. मिश्र, कृष्ण कुमार, सूचना और समाज, पृष्ठ–25
2. भाषा, मार्च–अप्रैल2023, अंक 307, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–103
3. हरीश सेठी, सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदीःआवश्यकता और अपेक्षा, विशेष लेख, 2013
4. समालोचन के वेबपोर्टल से उद्धृत
5. जनकृति पत्रिका के वेबपोर्टल से, कुमार गौरव मिश्र, 2015
6. अपनी माटी पत्रिका के वेबपोर्टल से, जितेन्द्र यादव व माणिक, 2022
7. भाषा, मार्च–अप्रैल 2023, अंक 307, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय उच्चतर शिक्षा विभाग शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–94
8. उपर्युक्त, पृष्ठ–94
9. शोध चिंतन पत्रिका के वेब पोर्टल से, रीतामणि वैश्य, 2020